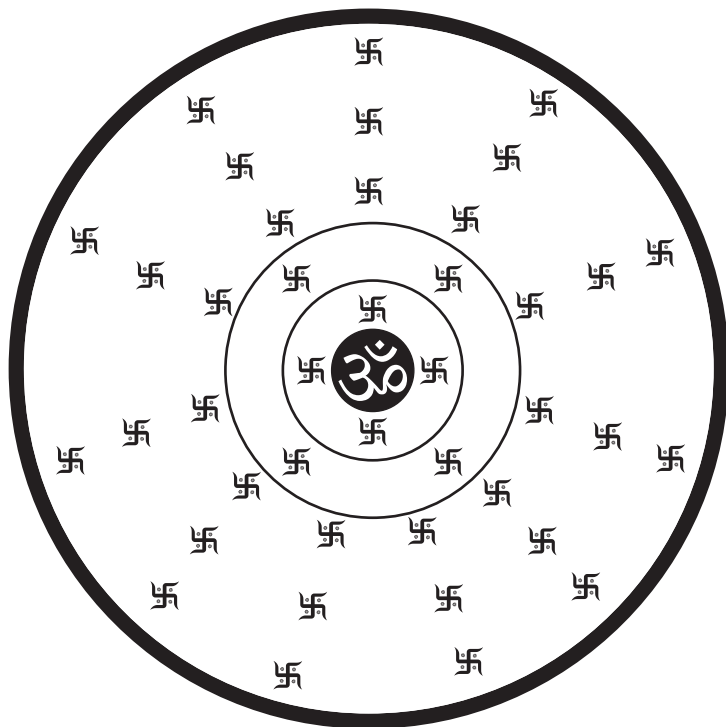


श्री चन्द्रप्रभ जिन विधान

मण्डला



मध्य - ॐ
प्रथम वलय - 4
द्वितीय वलय - 4
तृतीय वलय - 32

श्री चन्द्रप्रभ जिन पूजन

स्थापना

धवल रंग शोभते चन्द्रप्रभ भगवान्।

अर्चा करने को विशद, करते हैं आह्वानम्॥

ॐ ह्रीं सर्व संकटहारी देहरा स्थित अतिशयकारी श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

नीर भराया मंगलकारी, रोग जरादिक का परिहारी।

चन्द्र प्रभु की महिमा गाते पद में सादर शीश झुकाते॥ 1॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय जन्म मृत्यु विनासानय जलं नि. स्वाहा।

चन्दन यहाँ चढ़ाने लाए, भव सन्ताप नाश हो जाए।

चन्द्र प्रभु की महिमा गाते पद में सादर शीश झुकाते॥ 2॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय संसारताप विनासनाय चन्दनं नि. स्वाहा।

अक्षत यहाँ चढ़ाते भाई, जो है जो है अक्षत सुपद प्रदायी।

चन्द्र प्रभु की महिमा गाते पद में सादर शीश झुकाते॥ 3॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं नि. स्वाहा।

सुरभित यह पुष्प चढ़ाने लाए, काम रोग मेरा नश जाए।

चन्द्र प्रभु की महिमा गाते पद में सादर शीश झुकाते॥ 4॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंशनाय पुष्प नि. स्वाहा।

शुभ नैवेद्य चढ़ा हर्षाएँ, क्षुधा रोग से मुक्ती पाएँ।

चन्द्र प्रभु की महिमा गाते पद में सादर शीश झुकाते॥ 5॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि. स्वाहा।

घृत के पावन जलाएँ, मोह से मुक्ती पाएँ।

चन्द्र प्रभु की महिमा गाते पद में सादर शीश झुकाते॥ 6॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय मोहानधकार विनाय दीपं नि. स्वाहा।

सुरभित धूप जलाने लाए, आठों कर्म नश पदने आए।

चन्द्र प्रभु की महिमा गाते पद में सादर शीश झुकाते॥ 7॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अष्टकर्म विनाशनाय धूपं नि. स्वाहा।

फल ताजे यहाँ चढ़ाए मोक्ष महा पदवी को पाए।
 चन्द्र प्रभु की महिमा गाते पद में सादर शीश झुकाते ॥८॥
 ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं नि. स्वाहा।
 अर्घ्य यह विशद पावन लाए, पद अनर्घ्य पाने आए।
 चन्द्र प्रभु की महिमा गाते पद में सादर शीश झुकाते ॥९॥
 ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्य नि. स्वाहा।

जयमाला

दोहा - भक्तों को तुम हे प्रभो!, करते मालामाल।
 देहरे वाले चन्द्र जिन, की गाते जयमाल ॥

चन्द्र प्रभु तुम जग हितकारी, महिमा तुमरी जग से न्यारी।
 देवों के तुम देव कहाते, जग के प्राणी तुमको ध्याते ॥
 पूर्व भवों में पुण्य कमाया, तुमने तीर्थकर पद पाया।
 वैजयन्त से चयकर आए, पञ्चकल्याणक देव मनाए ॥
 महासेन के राज दुलारे, माँ सुलक्षणा के हो प्यारे।
 चन्द्रपुरी में जन्म उपाए, गिरि सम्मेद से मोक्ष सिधए ॥
 अलवर जिला में नगर तिजारा, देहरे का है अजब नजारा।
 जब भी मुनिवर नगर में आते, टीले में प्रतिमा बतलाते ॥
 जहाँ पे टीला था शुभकारी, जंगल फैला था भयकारी।
 भारत में आई आजादी, बढ़ने लगी यहाँ आबादी ॥
 शासन के आदेश से भाई, चौड़ी सड़क वहाँ करवाई।
 उस टीले की हुई खुदाई, उसमें प्रतिमा दर्ई दिखाई ॥
 त्रय खण्डित प्रतिमाएँ पाए, मन में श्रावक आस लगाए।
 कई दिनों तक चली खुदाई, किन्तू जिन प्रतिमा ना पाई ॥
 वैद्य बिहारी यहाँ के गाए, पत्नी सरस्वती कहलाए।
 स्वप्न रात में उसको आया, उसने प्रभु का दर्शन पाया ॥
 दीपक ले देहरे पे आई, उसने रेखा वहाँ बनाई।
 प्रातः लोग वहाँ पर आए, धीरे-धीरे भूमि खुदाए ॥
 चन्द्रप्रभु की प्रतिमा पाए, लोग सभी मन में हर्षाए।
 खुश हो जय-जयकार लगाए, यात्री उनके दर्शन पाए ॥
 श्रावण सुदि दशमी शुभकारी, तिथि हो गई पावन मनहारी।
 अतिशय हुए जहाँ पे भारी, वाञ्छित फल पाए नर नारी ॥

पुत्र हीन सुन्दर सुत पाए, निर्धन मन वाञ्छित फल पाए।
 बुद्धि हीन सदबुद्धि जगाए, रोगों से कई मुक्ती पाए ॥
 भूत प्रेत की हो बाधाएँ, प्राणी उनसे मुक्ती पाएँ।
 दीप जलाकर आरति गाते, प्रभु के ऊपर छत्र चढ़ाते ॥
 चालीसा जो मन से ध्याते, उनके कार्य सिद्ध हो जाते।
 प्रभु के दर जो प्राणी आते, अपने वे सौभाग्य जगाते ॥

दोहा - 'विशद' भाव से हे प्रभो! करते हम गुणगान।

पूरी हो मम् कामना, चन्द्र प्रभू भगवान ॥

ॐ ह्रीं देहरा तिजारा स्थित अतिशयकारी श्री चन्द्र प्रभु जिनेन्द्राय
 जयमाला पूर्णार्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - चरण कमल में आपके, झुका रहे हम शीश।
 ऋद्धि सिद्धि सम्पति बढ़े, हे त्रिभुवन पति ईश ॥

॥ इत्याशीर्वाद ॥ चतुर्थ वलयः

प्रथम वलयः

दोहा - कर्म घातिया नाशकर, अनन्त चतुष्टय वान।
 जिनकी अर्चा हम करें, पाने शिव सोपान ॥

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

जो ज्ञानावरण नशाए, वे केवल ज्ञान जगाए।
 हम चन्द्रप्रभु को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते ॥१॥

ॐ ह्रीं ज्ञानावरण कर्मविनाशक केवलाज्ञानप्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय
 अर्घ्य निर्व. स्वाहा।

हैं दर्शावरण विनाशी, प्रभु दर्शानन्त प्रकाशी।
 हम चन्द्रप्रभु को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते ॥२॥

ॐ ह्रीं दर्शनावरण कर्मविनाशक केवलादर्शनप्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय
 अर्घ्य निर्व. स्वाहा।

जो मोह कर्म विनशाए, वे सुखानन्त को पाए।
 हम चन्द्रप्रभु को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते ॥३॥

ॐ ह्रीं मोहनीयकर्मविनाशक अनन्तसुख प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय
 अर्घ्य निर्व. स्वाहा।

जो अन्तराय विनशाए, वे वीर्यान्त जगाए।

हम चन्द्रप्रभु को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते ॥ 4 ॥

ॐ ह्रीं अन्तराय कर्मविनाशक अनन्तवीर्यप्राप्तश्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

द्वितीय वलयः

दोहा - प्रातिहार्य वसु प्राप्त हैं, चन्द्र प्रभू भगवान।

विशद भाव से आज हम, करते हैं गुणगान ॥

द्वितीय वलयोपरिपुष्पांजलिं क्षिपेत्

तरुवर अशोक शुभकारी है, जो सारे शोक निवारी है।

जो प्रातिहार्य कहलाता है, जिन की महिमा दर्शाता है ॥ 1 ॥

ॐ ह्रीं अशोक तरु सत्प्रातिहार्य सहित सर्व संकटहारी देहरा स्थित अतिशयकारी
श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिंहासन रत्न जड़ित जानो, जिसपे आसन जिनका मानो।

जो प्रातिहार्य कहलाता है, जिनकी महिमा दर्शाता है ॥ 2 ॥

ॐ ह्रीं सिंहासन सत्प्रातिहार्य सर्व संकटहारी देहरा स्थित अतिशयकारी
श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रय क्षेत्र आपके शीश रहे, त्रिभुवन के स्वामी आप कहे।

जो प्रातिहार्य कहलाता है, जिनकी महिमा दर्शाता है ॥ 3 ॥

ॐ ह्रीं छत्रत्रय सत्प्रातिहार्य सर्व संकटहारी देहरा स्थित अतिशयकारी
श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भामण्डल आभा दर्शाए, जो सप्त भवों को दिखलाए।

जो प्रातिहार्य कहलाता है, जिनकी महिमा दर्शाता है ॥ 4 ॥

ॐ ह्रीं भामण्डलसत्प्रातिहार्य सर्व संकटहारी देहरा स्थित अतिशयकारी
श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय वलयः

दोहा - संकट हारी चन्द्रप्रभू, का करते गुणगान।

अर्घ्य चढ़ाते भाव से, करने निज कल्याण ॥

(तृतीय वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(तर्ज-बेसरी छन्द)

मन के सभी विकार नशाए, जिन पूजा मन शांति दिलाए।

चन्द्र प्रभू भव ताप निवारी, रहे जहाँ में मंगलकारी ॥ 1 ॥

ॐ ह्रीं श्री मानसिक पापोद्भवोद्व निवारकाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोष वचन के पूर्ण निवारे, जीवन अर्चा शीघ्र सवारे।

चन्द्र प्रभू भव ताप निवारी, रहे जहाँ में मंगलकारी ॥ 2 ॥

ॐ ह्रीं वाचनिक पापोद्भवोद्व निवारकाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काय दोष की नाशन कारी, जिन पूजा है अतिशयकारी।

चन्द्र प्रभू भव ताप निवारी, रहे जहाँ में मंगलकारी ॥ 3 ॥

ॐ ह्रीं कायिक पापोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राज्य गेह लक्ष्मीपुर जानो, होय उपद्रव भारी मानो।

चन्द्र प्रभू भव ताप निवारी, रहे जहाँ में मंगलकारी ॥ 4 ॥

ॐ ह्रीं राज लक्ष्मीपुर राज्यगेह पदभ्रष्टोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री चन्द्रप्रभ
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मादय जीवन में आए, घोर उपद्रव जिन्हें सताए।

चन्द्र प्रभू भव ताप निवारी, रहे जहाँ में मंगलकारी ॥ 5 ॥

ॐ ह्रीं दरिद्रोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

भीम भगन्दर जिन्हे सताए, कुष्ट जलोदर यदि हो जाए।

चन्द्र प्रभू भव ताप निवारी, रहे जहाँ में मंगलकारी ॥ 6 ॥

ॐ ह्रीं भीमभगंदरगलितकुष्ठगुल्मरक्तपित्तवातकस्फोटकाद्युपद्रव निवारकाय
श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इष्ट वियोग का दुःख सताए, अनिष्ट संयोग जीवन में आए।

चन्द्र प्रभू भव ताप निवारी, रहे जहाँ में मंगलकारी ॥ 7 ॥

ॐ ह्रीं इष्टवियोगानिष्टसंयोगोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्व पर चक्रोद्भव से भाई, होय उपद्रव यदि दुख दायी।
चन्द्र प्रभू भव ताप निवारी, रहे जहाँ में मंगलकारी ॥ 8 ॥

ॐ ह्रीं स्वचक्रपरचक्रोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाना आयुध देह नशाए, घोर उपद्रव यदि हो जाए।
चन्द्र प्रभू भव ताप निवारी, रहे जहाँ में मंगलकारी ॥ 9 ॥

ॐ ह्रीं विविधायुधोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नक्र चक्र घड़ियाल सतावें, जल चर प्राणी दुख पहुँचावें।
चन्द्र प्रभू भव ताप निवारी, रहे जहाँ में मंगलकारी ॥ 10 ॥

ॐ ह्रीं जलचरजीवदुष्टोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्याघ्र सिंह गज हैं वनचारी, दुख पहुँचावें कोई भारी।
चन्द्र प्रभू भव ताप निवारी, रहे जहाँ में मंगलकारी ॥ 11 ॥

ॐ ह्रीं व्याघ्रसिंहगजादिवनपर्वतवासिश्वापदाद्युपपद्रव निवारकाय
श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूचर खेचर जीव सतावें, तीव्र क्रूरता जो दिखलावें।
चन्द्र प्रभू भव ताप निवारी, रहे जहाँ में मंगलकारी ॥ 12 ॥

ॐ ह्रीं भूचरगगनचरक्रूरजीवोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भीम भुजंगम बिच्छू जानो, घोर विषैले प्राणी मानो।
चन्द्र प्रभू भव ताप निवारी, रहे जहाँ में मंगलकारी ॥ 13 ॥

ॐ ह्रीं व्यालवृश्चिकादिविषदुर्द्धरोपद्रव निवारकाय श्री चन्द्रप्रभ
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नख श्रृंगादिक विषधर गाए, विष से प्राणी मुक्ती पाए।
चन्द्र प्रभू भव ताप निवारी, रहे जहाँ में मंगलकारी ॥ 14 ॥

ॐ ह्रीं दुष्टजीवपदकरनखोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री चन्द्रप्रभ
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चंचु तुण्ड दन्तादिक धारी, कोई जीव सतावे भारी।
चन्द्र प्रभू भव ताप निवारी, रहे जहाँ में मंगलकारी ॥ 15 ॥

ॐ ह्रीं चंचुतुण्डदाढाकटकोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दावानल वन मध्य जलावे, उससे प्राणी दुख यदि पावे।
चन्द्र प्रभू भव ताप निवारी, रहे जहाँ में मंगलकारी ॥ 16 ॥

ॐ ह्रीं दावानलोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।
(सखी छन्द)

हो वेग पवन का भारी, दुर्जय हो विस्मयकारी।
श्री चन्द्रप्रभू को ध्याये, अतिशीघ्र शांत हो जाए ॥ 17 ॥

ॐ ह्रीं प्रचंडपवनोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।
नौकादिक से गिर जाए, दारुण दुख जिसे सताए।
श्री चन्द्रप्रभू को ध्याये, अतिशीघ्र शांत हो जाए ॥ 18 ॥

ॐ ह्रीं नौकास्फुटितपतनोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वन पर्वत भू भयकारी, हो भीम उपद्रव भारी।
श्री चन्द्रप्रभू को ध्याये, अतिशीघ्र शांत हो जाए ॥ 19 ॥

ॐ ह्रीं वनगगनभेदिनीभयंकरोपद्रव निवारकाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो नदी सरोवर भाई, हृद कूप झील दुखदायी।
श्री चन्द्रप्रभू को ध्याये, अतिशीघ्र शांत हो जाए ॥ 20 ॥

ॐ ह्रीं नदीसरोवरबाधिकूपहृदोपद्रव निवारकाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बिजली वर्षा भयकारी, ओला पाला हो भारी।
श्री चन्द्रप्रभू को ध्याये, अतिशीघ्र शांत हो जाए ॥ 21 ॥

ॐ ह्रीं विद्युत्पातादिभीमांबुवृष्ट्युपद्रव निवारकाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रण में शत्रू दल आवे, शस्त्रो का भय दिखलावे।
श्री चन्द्रप्रभू को ध्याये, अतिशीघ्र शांत हो जाए ॥ 22 ॥

ॐ ह्रीं संग्रामस्थलारिनिकटोपद्रव निवारकाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शाकिन डाकिन भयकारी, हो भूत प्रेत दुखकारी।
श्री चन्द्रप्रभू को ध्याये, अतिशीघ्र शांत हो जाए॥ 23 ॥

ॐ ह्रीं डाकिनी भूतप्रेतपिशाचादिभय निवारकाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उच्चाटन मोहन कारी, स्थंभन हो दुखभारी।
श्री चन्द्रप्रभू को ध्याये, अतिशीघ्र शांत हो जाए॥ 24 ॥

ॐ ह्रीं मोहनस्थंभनोच्चाटनप्रमुखदुष्टविद्योपद्रव निवारकाय श्री चन्द्रप्रभ
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

खोटे ग्रह जिन्हें सताएँ, कर्मोदय से दुख पाएँ।
श्री चन्द्रप्रभू को ध्याये, अतिशीघ्र शांत हो जाए॥ 25 ॥

ॐ ह्रीं दुष्टग्रहाद्युपद्रव निवारकाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
दृढ़ श्रंखलादि का भाई, बन्धन होवे दुखदायी।
श्री चन्द्रप्रभू को ध्याये, अतिशीघ्र शांत हो जाए॥ 26 ॥

ॐ ह्रीं श्रंखलाद्युपद्रवनिवारकाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
कोई अल्प मृत्यु को पाए, उसका संकट आ जाए।
श्री चन्द्रप्रभू को ध्याये, अतिशीघ्र शांत हो जाए॥ 27 ॥

ॐ ह्रीं अल्पमृत्युपद्रवनिवारकाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
दुर्भिक्ष उपद्रव भारी, जीवों में हो भयकारी।
श्री चन्द्रप्रभू को ध्याये, अतिशीघ्र शांत हो जाए॥ 28 ॥

ॐ ह्रीं दुर्भिक्षोपद्रवनिवारकाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
व्यापार वृद्धि ना पावे, कोई अन्तराय आ जावे।
श्री चन्द्रप्रभू को ध्याये, अतिशीघ्र शांत हो जाए॥ 29 ॥

ॐ ह्रीं व्यापारवृद्धिपद्रवनिवारकाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
बन्धू जन जिन्हे सताएँ, उनसे अतिशय दुख पाएँ।
श्री चन्द्रप्रभू को ध्याये, अतिशीघ्र शांत हो जाए॥ 30 ॥

ॐ ह्रीं बन्धुत्वोपद्रवनिवारकाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
अकुटुम्बी हो दुखदायी, संक्लेश बढ़ावे भाई।
श्री चन्द्रप्रभू को ध्याये, अतिशीघ्र शांत हो जाए॥ 31 ॥

ॐ ह्रीं अकुटुंबोपद्रवनिवारकाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कोई पाप उदय में आवे अपकीर्ति विशद हो जावे।
श्री चन्द्रप्रभू को ध्याये, अतिशीघ्र शांत हो जाए॥ 32 ॥

ॐ ह्रीं अपकीर्त्युपद्रवनिवारकाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चौंसठ ऋद्धी धारी श्री जिन, जिनको ना उनसे है राग।
इस संसार देह भोगों से, रहते हैं जो पूर्ण विराग॥
ज्ञान ध्यान संयम तप द्वारा, करने वाले कर्म विनाश।
यह संसार असार छोड़कर 'विशद' करें शिवपुर में वास॥ 33 ॥

ॐ ह्रीं चतुःषष्टिऋद्धिसमानांगाय देहरा तिजारा श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साठ अर्घ्यों से विशद, जिनचंद की अर्चा करें।
निज विघ्न सारे शान्त करके, मोक्ष लक्ष्मी को वरें॥

ॐ ह्रीं शतैक विंशति अर्घ्योपरान्त पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जाय - ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं अर्हं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः।

समुच्चय जयमाला

जग जीवों को कर रहे, हे जिन! आप निहाल।
अतः आपकी हम यहाँ, गाते हैं जयमाल॥

(चौबोल छन्द)

अष्टम जिनवर चन्द्रप्रभू जी, आप धवल आभा वाले।
कर्म विजेता अक्षय साधक, निजगुण के हो रखवाले॥
विशद गुणों से इस वसुधा पर, रत्नों जैसे चमक रहे।
और सूर्य मण्डल से ज्यादा, शतक सूर्य से दमक रहे॥ 1 ॥
महानीतियों महाकलाओं, के प्रभु आप हिमालय हो।
लोकालोक प्रकाशी हे जिन, केवलज्ञान के आलय हो॥
सर्व सम्पदाओं के स्वामी, चन्द्र सरीखे उदित हुए।
सुगुण सरोवर के कमलों सम, रवि को पाके मुदित हुए॥ 2 ॥
परम तेज औ परम ओज के, चन्द्रप्रभू जी धाम कहे।
कर्म कलंक रहित अविनाशी, शिवपथ के पैगाम रहे॥
लोकालोक प्रकाशी भगवन्, मोक्ष मार्ग दर्शायक हो।
आप हीनता रहित लोक में, जगत पूज्य शिव नायक हो॥ 3 ॥

महामोह अन्तर में रहता, जिसके भी काला काला।
 उसके अन्दर जले कषायों, की निशदिन दुखकर ज्वाला॥
 सहस्र रश्मि दिनकर भी जिसको, नहीं नशाने योग्य रहा।
 किन्तु चन्द्रप्रभु ज्ञान आपका, वह विनाश के योग्य कहा॥ 4॥
 पूज्य चन्द्रप्रभु चरण आपके, महाकांति से वर्धित हैं।
 स्वर्ग मोक्ष की विपुल सम्पदा, देने वाले अर्चित हैं॥
 भव्य जनों से पूज्य आपकी, वाणी है जग कल्याणी।
 मुक्ती मार्ग दिखाने वाली, विशद कही है जिनवाणी॥ 5॥

दोहा - नाथ! आपके नाम का, जाप हरे सन्ताप।

ध्याते हैं हम आपको, कट जावें सब पाप।

ॐ ह्रीं कष्टनिवारक श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्रप्रभू भगवान का, जपें निरन्तर नाम।

ऋद्धि सिद्धि समृद्धि हो, करके चरण प्रणाम॥

इत्याशीर्वादः

श्री वासुपूज्य विधान

मण्डला



मध्य - ॐ

प्रथम वलय - 16

द्वितीय वलय - 10

तृतीय वलय - 12

चतुर्थ वलय - 36

पंचम वलय - 08

कुल वलय : 82